Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies,
Online ISSN 2278-8808, SJIF 2016 = 6.17, www.srjis.com
UGC Approved Sr. No.49366, JAN-FEB 2018, VOL- 5/43

mPp ek/;fed fo|ky;k d i/kkukpk;k dh urRo 'kyh dh iHkkoशkhyrk dk fo|ky; fodkl ij iHkko dk v/;;u

jkt dqekj ekyh[1], **Ph. D. &** Jh. vuqi dqekj[2]

[1]ch Vh Vh Ih ¼Ih Vh b½, xk/kh fo|k efUnj, I jnkj 'kgj] p: jktLFkku

[2]vkb ए एस ई (डी) वि वविद्यालय, I jnkj 'kgj p: jktLFkku

Scholarly Research Journal's* is licensed Based on a work at *www.srjis.com

ckyd dk tUe o fodkl lekt e gkrk g ,o ml ij lekt dk iHkko iMrk gA vr% tIk lekt gkxk o lk gh ogk dk ckyd lenk; gkxkA lekt dh mUufr d लिए आव यक है कि बालकों या समाज के सदस्यों हेतु उचित प्रबंध कियk tkuk pkfg,A समाज के विकास करने हेतु भौक्षिक आव यकता की पूर्ति के लिए ही विद्यालय का निर्माण किया जाता है। समाज की सामाजिक प्रतिश्ठा समाज में ि ाक्षक की सामाजिक प्रतिश्ठा, मान सम्मान पर fuHkj gkrh gA ik; ;g ekuk Hkh tkrk g fd lekt dHkh Hkh अपने ि ाक्षकों के स्तर से उपर नही हो सकता। ि ाक्षक Hkh हमे ाा अपनी ि ाक्षण की ifØ;k e uokpkj dk viukr g,] d{kk ि ाक्षण के दौरान ि ाक्षार्थियों से संवाद के उपयुक्त विधियों को अपनाते हुए समाज की आव यकताओं के अनुरूप अपने ि ाक्षण की प्रक्रिया को प्रभाव ााली ढंग से क्रियान्वित करेंगें। fo|kfFk;k d lEi.k fodkl o fo|ky; के कु ाल प्र ाासन हेतु प्रधानाचार्य क urRo dh egRoi.k Hkfedk gkrh gA i/kkukpk; fo|ky; dk gh urk ugh oju lekt dk Hkh urk gA fo|ky; ,d lkekftd lLFkk g] जो कि समाज का आद ा रूप प्रस्तुत करता है। i/kkukpk; lLFkkxr ;ktuk dk fuek.k करता है। जिसका निर्माण विद्यालय द्वारा प्राप्त किये जाने वाले उद्दे यों को मुख्य रूप में ध्यान में रखते हुए किया जाता है। इसमें विद्यालय के विकास, ि ाक्षकों तथk Nk=k dh शैक्षिक आव कताओं तथा सामुदायिक आकाक्षाओं से जुडे हुए कार्यक्रमों को भाामिल किया tkrk gA

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

bl /kjrh ij leLr ikf.k;k e eu"; dk जीवन सर्वोतम है। नि चय ही मनुष्य ई वर की सबसे अनुपम रचना है। मनुश्य समाज में रह कर thou 0;rhr djrk g vkj lkekftd c/kuk dk cuku rFkk nljk d lkFk lek;ktu dju dh p"Vk djrk gA लेकिन इसका अर्थ यह नही है कि मानव f`I`J में इस प्रकार के सामाजिक गुण vkj व्यवहारिक वि ोषताएं जन्मजात होती है। फ्रीमैन एवं भौवल[1] d vulkj ^^lkekftd fodkl lh[ku dh og ifØ;k g tk leg d Lrj] ijEijkvk rFkk jhfr&fjokt k d vudy viu vki dk <kyu rFkk ,drk] ey tky vkj ijLifjd lg;kx dk Hkkouk Hkju e lgk;d gkrh gA** eu"; lkekftd ik.kh gku d dkj.k viu lekt ;k leg dh vi{kkvk] vkdk{kkvk] ijEijkvk] iFkkvk ekudk o eY;k dk vftr dju dk i;kl djrk gA ckyd e lkekftd x.kk ,o 0;ogkjk dh mRifRr mld lkekftd fodkl dk |krd gkrk gA tUe से ही बालक अपने परिवे I के प्रति अंतक्रिया करना प्रारम्भ कर देता है जो मुख्य रूप में उसकी आव यकताओं की ifr d :Ik e gkrh gA

f'k{kk l doy ckf)d fodkl gh ugh] cfYd 0;fDr dh leLr 'kfDr;k vkj {kerkvk dk fodkl Hkh lEHko gk ikrk gA f'k{kk idk'k d leku g ftld }kjk 0;fDr ,o lekt e Qy vKkurk :ih v/kdkj dk de djr g, lekIr fd;k tk ldrk gA mifu"knk[2] d vulkj ^^f'k{kk efDr dk ekxl gA** f'k{kk d }kjk gh oreku e ckyd dh leLr 'kkjhfjd] ekufld] lkekftd rFkk vk/;kfRed 'kfDr;k dk fodkl lHko gk ikrk g] ftll og lekt dk ,d mÙkjnk;h ukxfjd cudj lekt d lokxh.k fodkl ,o mUufr e viuh ;kX;rk dk yxkrkj i;kx djr g, lH;rk o lLdfr dk iuthfor rFkk iuLFkkfir dju d fy; i;kljr jgA f`I`kक्षा के द्वारा ही वह नये fopkjk rFkk thou d fofHkUu :ik dk vknku&inku djrk gA

v/;;u dh vkoश;drk

ckyd dk tUe o fodkl lekt e gkrk g ,o ml ij lekt dk iHkko iMrk gA vr% tIk lekt gkxk olk gh ogk dk cky lenk; gkxkA lekt dh mUufr d

---

[1] exy· ,l· d· 'f`I`kक्षा मनोविज्ञान', प्रिटिंक हाल, इंडिया प्राईवेट लिमिटिड, नई दिल्ली, 2008 पृश्ठ संख्या 136।

[2] Sachdeva Dr. M S, Sharma Dr. K.K., Bindal Ms. Shivani, Sahu Mr. P.K., "Twenty First Century Publication" Patiala 2007, Page No. 02

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

लिए आव यक है कि बालकों की ि ाक्षा हेतु उचित प्रबंध किया जाए। समाज के सदस्यों की भौक्षिक आव यकता की पूर्ति के लिए ही विद्यालय का निर्माण किया जाता है। दोनों dk mRFkku&iru ,d&nlj ir आधारित है। परन्तु समाज के ि ाक्षा संबंधी समस्त i;kl rHkh lQy gk ldr gA tcfd lekt dh leLr lLFkk, lg;kx djA vr% समाज को अपने आप को जीवित रखने हेतु उपयोगी ि ाक्षा का प्रबन्ध करना चहिए।

f'k{kk dh ifd;k e x: dk lcl महत्वपूर्ण स्थान होता है। बिना गुरू के ि ाश्य का उचित मार्गद र्ान संभव नही हो ikrk। गुरू में तीन बाते अव य रूप में होनी चाहिए। पहला तो वह अपने विशय का वि)ku gk Dpkfd गुरू की विद्वता ि ाश्य के लिए वरदान curh gA nljk og pfj=oku gkuk pkfg,A bldk lh/kk vFk ;g g fd mldk vkpj.k ऐसा आद र्ा होना चाहिए, जिसका अनुकरण कर ि ाश्य अपने जीवन को भी उत्कृश्टता की ओर ले जा सके। तीसरा उसका प्रत्येक ि ाश्य के साथ पितृत्व व्यवहार होना चाहिए। प्रत्येक ि ाश्य के प्रति स्वाभाविक प्रेम तथा उसे आगे बढाने की भावना ि ाश्यों में उसdk दिखाई देनी चाहिए। इस तरह गुरू के प्रति ि ाश्य की अटूट श्रद्धा होनी चाहिए, पर वह J)k vU/k&HkfDr ugh gk] cfYd le> d lkFk mRiUu gkuh pkfg,A ि ाक्षक के बारे में jfoUn ukFk Vxkj[3] u dgk g fd ^^,d v/;kid lPp vFkk e dHkh Hkh i<k ugh ldrk ;fn og Lo; vkt Hkh i< u jgk gk ,d nhid nwljs nhid dk **प्रका ामान नही कर सकता यदि वह अपनी लौ को जलती हुई नही रखता।**'' bl प्रकार अध्यापक एक दीपक के समान है जो स्वंय जल कर दूसरों को प्रकाि ात करने के lkFk&lkFk पथ प्रदि ात करता gA

fo|ky;h ि ाक्षा की प्रक्रिया एक नही बल्कि कई ि ाक्षकों के आपसी सहयोग व तालमेल से चलती है। इस प्रकार यह सारी प्रक्रियाऐं एक नि ाचत व्यवस्था के रूप में fo|ky; e lpk: :lk e pyrh gA tlk dh mijkDr of.kr gvk g fd fo|ky; e ,d ugh cfYd db v/;kidk dh egRoi.k Hkfedk gkrh gA bu lHkh v/;kidk d समूह को व्यवस्थित रूप में कार्य करवाने के लिए एक कु ाल नेता अर्थात् प्रधानाचार्य की परम आव यकता होती है। विद्यालय व्यवस्था में यह कु ाल नेता कोई और नही बल्कि

[3] Sachdeva Dr. M S, Sharma Dr. K.K., Bindal Ms. Shivani, Sahu Mr. P.K., "Twenty First Century Publication" Patiala 2007, Page No. 05

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

विद्यालय का ही एक वरिश्ठ अध्यापक होता है। जिस तरह परिवार का मुख्यिा सबसे बड़ा 0;fDr gkrk gA गांव या भाहर के मुखिया को प्रजातंत्रात्मक प्रणाली के रूप में मतदान के }kjk puk tkrk gA D;kfd fo|ky; e lHkh v/;kid ;kX;rk/kkjh gkr gA ,l e अनुभव में सबसे श्रेश्ठ v/;kid dk fo|ky; d i/kkukpk;l d :Ik e dk;xg.k djok;k tkrk gA fo|ky; dh leLr गतिविधिया चाहे वे विद्यालय से जुड़ी हुई हों या प्र ासन l i/kkukpk;l d urRo e gh dk;l djrh gA

प्रधानाचार्य सर्वप्रथम ि ाक्षक है और बाद में प्र ासक। प्रधानाचार्य द्वारा ि ाक्षण कार्य न केवल ि ाक्षकों के मार्गद िन के लिए आव यक है बल्कि यह उसके लिए छात्रो d lEid e vku dk lokre lk/ku Hkh gA blI og fo|ky; dh pkfjf=d Hkkouk dk उन्नत बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। आद िवादियों[4] u i/kkukpk;l dk cgr gh egRoi.k ekuk gA bud vulkj] ^^i/kkukpk;l dk LFkku cMk mpk g og Nk= d thou dk ekxn'kd g] ml vU/kdkj l idk'k dh vkj y tku okyk g] ml lPpk Kku nu okyk ekuk x;k g] 0;fDrRo dk fuek.k dju okyk ekuk g] og f'k{k.k ifØ;k dh /kjh g] fcuk mld f'k{k.k ifØ;k v/kjh jgxhA**

ि ाक्षण कार्य को स्वंय करने के साथ–साथ वह विद्यालय के ि ाक्षण–कार्य के स्तर को mUur cuku d fy, Hkh dk;l djA i/kkuk/;kd dk ,d ie[k dr0; ;g Hkh g fd og विद्यालय में ि ाक्षण के स्तर को उच्च बनाये। इसके लिए उसको विद्यालय में उपयुक्त एवं यथेष्ट सामग्री की व्यवस्था करना परमाव यक है। इसके अतिरिक्त नवीन शैक्षिक fl)kUrk ,o ifØ;kvk dk 0;ogkfjd :Ik inku dj vkj fo|ky; e mu ि ाक्षण–विधियों एवं सहायक सामग्री के प्रयोग पर बल दे जिनके द्‌वारा बालक सरलता से सीख सकें। इसके साथ ही वह ि ाक्षण कार्य के स्तर को उन्नत बनाने के लिए fo|ky; e 0;kolkf;d lkfgR; dh 0;oLFkk dj vkj uohu ifof/k;k ,o ;fDr;k d प्रयोग के लिए आव यक कदम उठाये।

[4] ik.M;] Mk- राम ाक्ल, ''ि ाक्षाद िन'', विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा, 1994 पृष्ठ संख्या 188

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

'kks/k leL;k

^^उच्च माध्यमिक विद्यालयों के प्रधानाचार्यों की नेतृत्व शैली की प्रभाव ीलता का fo|ky; fodkl ij iHkko dk v/;;uA**

'kks/k ds mn~ns';

1. 'kgjh mPp ek/;fed fo|ky;k dh efgyk i/kkukpk;k dh urRo 'kyh dh प्रभाव ीलता का विद्यालय के विकास पर प्रभाव का अध्ययन करना।
2. 'kgjh mPp ek/;fed fo|ky;k d पुरूश i/kkukpk;k dh urRo 'kyh dh प्रभाव ीलता का विद्यालय के विकास पर प्रभाव का अध्ययन करना।
3. xkeh.k mPp ek/;fed fo|ky;k dh efgyk i/kkukpk;k dh urRo 'kyh dh प्रभाव ीलता का विद्यालय के विकास पर प्रभाव का अध्ययन करना।
4. ग्रामीण उच्च माध्यमिक विद्यालयों के पुरूश प्रधानाचार्यों की नेतृत्व शैली की प्रभाव ीलता का विद्यालय के विकास पर प्रभाव का अध्ययन करना।

'kks/k dh ifjdYiuk

1. 'kgjh mPp ek/;fed fo|ky;k dh efgyk i/kkukpk;k dh urRo 'kyh dh प्रभाव ीलता का विद्यालय के विकास पर सार्थक प्रभाव नही पड़ता है।
2. 'kgjh mPp ek/;fed fo|ky;k d पुरूश i/kkukpk;k dh urRo 'kyh dh प्रभाव ीलता का विद्यालय के विकास पर सार्थक प्रभाव नही पड़ता gA
3. xkeh.k mPp ek/;fed fo|ky;k dh efgyk i/kkukpk;k dh urRo 'kyh dh प्रभाव ीलता का विद्यालय के विकास पर सार्थक प्रभाव नही पड़ता है।
4. ग्रामीण उच्च माध्यमिक विद्यालयों के पुरूश प्रधानाचार्यों की नेतृत्व शैली की प्रभाव ीलता का विद्यालय के विकास पर सार्थक पHkko ugh iMrk gA

'kks/k dk U;k;n'kZ

iLrr 'kks/kdk; e gfj;k.k jkT; d 5 ftyk l i/kkukpk;k dk puko fd;k x;kA ftudk fooj.k fuEufyf[kr g %&

1- efgyk i/kkukpk; 40

2- i:"k i/kkukpk; 40

भोध अध्ययन के उपकरण

iLrr 'kk/k e 'kk/kdrk }kjk vkdMk d ldyu gr 'kk/k leL;k d pjk l lcf/kr fuEu ifj{k.k dk i;kx fd;k tk,xkA

Sr. No.	Name of Author	Name of Test
1.	Leadership Effictiveness Scale	Haseen Taj
2.	Format of School Growth	Self Constrected

श्kk/k dh lhekdu

Kku vur ,o vFkkg g tcfd eu"; dh {kerk, lhfer gA 'kk/kdk; le;] /ku] ,o Je dh nf"V l fdQk;rh gkuk pkfg, vr% mDr rF; dk /;ku e j[kr g, 'kk/kdk; dk lhekdu fuEuor fd;k x;k g %&

1. bl 'kk/kdk; e doy mPp ek/;fed Lrj d fo|ky;k dk v/;;u fd;k tk,xkA
2. उच्च माध्यमिक स्तर के प्रधानाचार्यों की नेतृत्व शैली की प्रभावशीलता का v/;;u fd;k tk,xkA
3. iLrr 'kk/k dk; e gfj;k.kk jkT; d fljlk] Qrgkckn] fglkj] dFky] d:{k= ftyk d mPp ek/;fed Lrj d fo|ky;k d i/kkukpk;k dk gh puko fd;k tk,xkA
4. iR;d fty e l 16 i/kkukpk;k dk puko fd;k tk,xkA

iLrr श्kk/k e i;Dr lkf[;dh

vkdMk dk ,df=r dju d ckn vkdMk dk lkj.khc) fd;k x;kA bld ckn भोध समस्या के अनुसार आंकड़ों को वर्गवार विभाजित करके उनका मध्यामान, ekud विचलन ज्ञात किया गया। भोध की परिकल्पनाओं का सत्यापन करने के लिए क्रान्तिक vuikr d }kjk fd;k x;kA

मध्यमान

ieki fopyu

Vh&ifj{k.k

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

ifjdYiuk l[;k 01

शहरी उच्च माध्यमिक विद्यालयों की महिला प्रधानाचार्यों की नेतृत्व शैली की प्रभाव ीलता

dk fo|ky; d fodkl ij lkFkd iHkko ugh iMrk gA

rkfydk l[;k 1

नेतृत्व भौली dh iHkko'khyrk	l[;k N	e/;eku Mean	ieki fopyu S. D.	t Values	lkFkdrk dk Lrj 0-05	0-01
mPp leg	3	49.50	6.03	0.23	lkFkd vUrj ugh gA	lkFkd vUrj ugh gA
fuEu leg	4	48.67	4.68			

Df=N1+N2-2=(3+4-2)=5

वि लेशण :– mi;Dr rkfydk l[;k 2 e 'kgjh mPp ek/;fed fo|ky;k dh महिला प्रधानाचार्यों की नेतृत्व भौली की प्रभाव ीलता में औसत समूह से ऊपर रहने वाली efgyk i/kkukpk;k ¼mPp leg½ ,o vkSlr leg l uhp jgu okyh efgyk i/kkukpk; ¼fuEu leg½ d fo|ky;k d fodkl d e/;ekuk ,o ieki fopyuk d vUrjk dh lkFkdrk dh ryuk dh xbZ gA mPp ,o fuEu leg d efgyk i/kkukpk;k d ikIrkdk का गणना द्वारा प्राप्त मध्यमान क्रम ा: 49-50 ,o 48-67 द ाये गये तथा प्रमाप–विचलन क्रम ा: 6-03 ,o 4-68 द ाये गये है। इनके आk/kkj ij x.kuk }kjk Vh eku (t) 0-23 प्राप्त हुआ है। स्वतंत्रता के अं ा 8 (df) ij 0-05 ,o 0-01 lkFkdrk Lrj dk rkfydk मान क्रम ा: 2-30 ,o 3-35 सारणी में द ाया गया है। गणना द्वारा प्राप्त टी मान (t) lkj.kh e fn; x; nkuk lkFkdrk Lrj d eku l fuEu gA vr: यहां पर निर्धारित भून्य ifjdYiuk Lohdr dh tkrh gA rkfydk e fn, x, nkuk legk d e/;ekuk dk अवलोकन करने से स्पश्ट होता है कि शहरी उच्च माध्यमिक विद्यालयों की महिला प्रधानाचार्यों की उच्च नेतृत्व भौली की प्रभाव ीलता वाली महिला प्रधानाचार्यो के विद्याy;k के विकास का मध्यमान, निम्न नेतृत्व भौली की प्रभाव ीलता वाली महिला प्रधानाचार्यो के

विद्यालयों के विकास के मध्यमान से अधिक है। अतः निश्कर्शतः कहा जा सकता है कि शहरी उच्च माध्यमिक विद्यालयों की महिला प्रधानाचार्यों की उच्च नेतृत्व भौली की प्रभाव ीलता वाली महिला प्रधानाचार्यो के विद्यालयों का विकास निम्न नेतृत्व भौली की प्रभाव ीलता वाली महिला प्रधानाचार्यो के विद्यालयों के विकास की तुलना में अच्छा है।

vkj[k l[;k & 01

प्रधानाचार्यो की नेतृत्व भौली की प्रभाव ीलता का विद्यालय विकास पर प्रभाव के e/;ekuk] ekud fopyuk] Vh- eku (t-value) का दण्डारेख प्रद ान

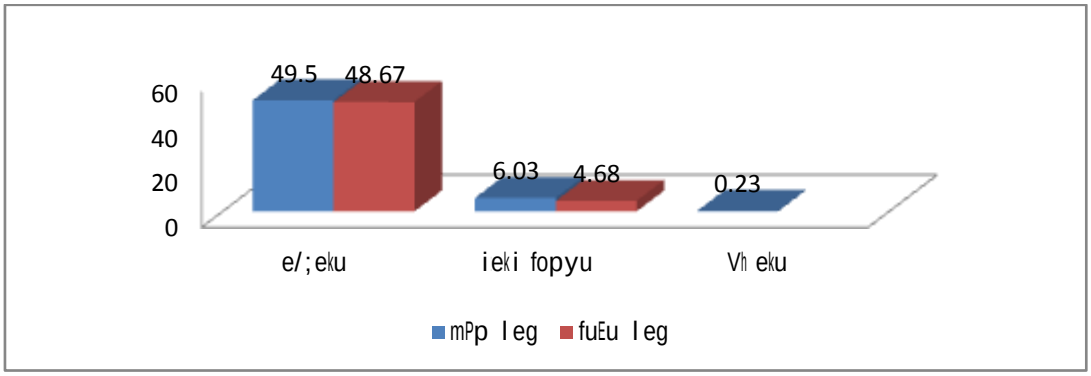

ifjdYiuk l[;k 02

शहरी उच्च माध्यमिक विद्यालयों के पुरूश प्रधानाचार्यों की नेतृत्व शैली की प्रभाव ीलता dk fo|ky;k d fodkl ij lkFkd iHkko ugh iMrk gA

rkfydk l[;k 2

नेतृत्व भौली dh प्रभाव ीलता	l[;k N	e/;eku Mean	ieki fopyu S. D.	t Values	lkFkdrk dk Lrj 0-05	0-01
mPp leg	4	49.25	1.50	1.20	lkFkd vUrj ugh gA	lkFkd vUrj ugh gA
fuEu leg	4	43.50	9.43			

Df=N1+N2-2=(4+4-2)=6

वि लेशण :– उपर्युक्त तालिका संख्या 3 में 'kgjh mPp ek/;fed fo|ky;k **के पुरूश प्रधानाचार्यों** dh नेतृत्व भौली की प्रभाव ीलता में औसत समूह से ऊपर रहने वाले पुरूश प्राधानाचार्यो (उच्च समूह) एवं औसत समूह से नीचे रहने वाले पुरूश i/kkukpk;k ¼fuEu leg½ d fo|ky;k d fodkl d e/;ekuk ,o ieki fopyuk d vUrjk dh lkFkdrk dh ryuk dh xbZ gA mPp एव निम्न समूह के पुरूश प्रधानाचार्यों के

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

प्राप्तांकों का गणना द्वारा प्राप्त मध्यमान क्रम ः 49-25 ,o 43-50 द र्ाये गये तथा प्रमाप–विचलन क्रम ः 1-50 ,o 9-43 द र्ाये गये है। इनके आधार पर गणना द्वारा टी eku (t) 1-20 प्राप्त हुआ है। स्वतंत्रता के अं र 6 (df) ij 0-05 ,o 0-01 lkFkdrk Lrj का तालिका मान क्रम ः 2-44 ,o 3-70 सारणी में द र्ाया गया है। गणना द्वारा प्राप्त टी eku (t) lkj.kh e fn; x; nkuk lkFkdrk Lrj d eku l fuEu gA vr% ;gk ij निर्धारित भून्य परिकल्पना स्वीकृत की जाती है। तालिका में दिए गए दोनो समूहk d मध्यमानों का अवलोकन करने से स्पश्ट होता है कि 'kgjh mPp ek/;fed fo|ky;k **के पुरूश प्रधानाचार्यों में** उच्च नेतृत्व भौली की प्रभाव ीलता वाले पुरूश प्रधानाचार्यो के विद्यालयों के विकास का मध्यमान, निम्न नेतृत्व भौली की प्रभाव ीलता वाले पुरूश i/kkukpk;k के विद्यालयों के विकास के मध्यमान से अधिक है। अतः निश्कर्शतः कहा जा ldrk g fd **शहरी उच्च माध्यमिक विद्यालयों के पुरूश प्रधानाचार्यों में** mPp urRo भौली की प्रभाव ीलता वाले पुरूश प्रधानाचार्यो के विद्यालयों का विकास निम्न नेतृत्व भौली की प्रभाव ीलता वाले पुरूश प्रधानाचार्यो के विद्यालयों के विकास की तुलना में vPNk gA

vkj[k l[;k & 02

प्रधानाचार्यो की नेतृत्व भौली की प्रभाव ीलता का विद्यालय विकास पर प्रभाव के e/;ekuk] ekud fopyuk] Vh- eku (t-value) का दण्डारेख प्रद र्ान

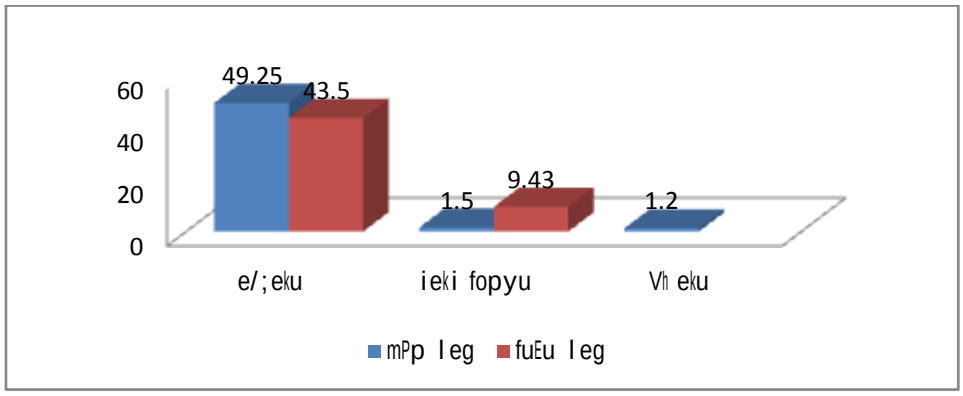

ifjdYiuk l[;k 03

xkeh.k mPp ek/;fed fo|ky;k dh efgyk i/kkukpk;k dh urRo 'kyh dh प्रभाव ीलता का विद्यालय के विकास पर सार्थक प्रभाव नही पड़ता है।

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

rkfydk l[;k 3

नेतृत्व भौली dh iHkkoशkhyrk	l[;k N	e/;eku Mean	iEki fopyu S. D.	t values	lkFkdrk dk Lrj 0-05	0-01
mPp leg	3	35.50	14.85	-0.59	lkFkd vUrj ugh gA	lkFkd vUrj ugh gA
fuEu leg	4	42.50	7.78			

Df=N1+N2-2=(3+4-2)=5

वि लेशण :– उपर्युक्त तालिका संख्या 3 e xkeh.k mPp ek/;fed fo|ky;ks dh efgyk i/kkukpk;kZ की नेतृत्व भौली की प्रभाव ीलता में औसत समूह से ऊपर jgu okyh ik/kkukpk;k ¼mPp leg½ ,o vkSlr leg l uhp jgu okyh i/kkukpk; ¼fuEu leg½ d fo|ky;k d fodkl d e/;ekuk ,o ieki fopyuk d vUrjk dh lkFkdrk dh ryuk dh xbZ gA mPp ,o fuEu leg dh i/kkukpk;k d iklrkdk dk गणना द्वारा प्राप्त मध्यमान क्रम ाः 35-50 ,o 42-50 द ार्ये गये तथा प्रमाप–विचलन क्रम ाः 14-85 ,o 7-78 द ार्ये गये है। इनके आधार पर गणना द्वारा टी मान (t) &0-59 प्राप्त हुआ है। स्वतंत्रता के अं ा 2 (df) ij 0-05 ,o 0-01 lkFkdrk Lrj dk rkfydk मान क्रम ाः 4-30 ,o 9-92 सारणी में द ार्या गया है। गणना द्वारा प्राप्त टी मान (t) सारणी में दिये गये दोनों सार्थकता स्तर के मान से निम्न है। अतः यहां पर निर्धारित भून्य ifjdYiuk Lohdr dh tkrh gA rkfydk e fn, x, nkuk legk d e/;ekuk dk अवलोकन करने से स्पश्ट होता है कि xkeh.k mPp ek/;fed fo|ky;ks dh i/kkukpk;ks e निम्न नेतृत्व भौली की प्रभाव ीलता वाली महिला प्रधानाचार्यो के विद्यालयों के विकास का मध्यमान, उच्च नेतृत्व भौली की प्रभाव ीलता वाली महिला i/kkukpk;k d fo|ky;k d विकास के मध्यमान से अधिक है। अतः निश्कर्शतः कहा जा ldrk g fd xkeh.k mPp ek/;fed fo|ky;ks dh i/kkukpk;ks में निम्न नेतृत्व भौली की प्रभाव ीलता वाली महिला प्रधानाचार्यो के विद्यालयों का विकास उच्च नेतृत्व भौली की प्रभाव ीलता वाली महिला प्रधानाचार्यो के fo|ky;k d fodkl dh ryuk e vPNk gA

vkjs[k l[;k & 03

प्रधानाचार्यो की नेतृत्व भौली की प्रभाव गिलता का विद्यालय विकास पर प्रभाव के e/;kekuk] ekud fopyuk] Vh- eku (t-value) का दण्डारेख प्रद नि

ifjdYiuk l[;k 04

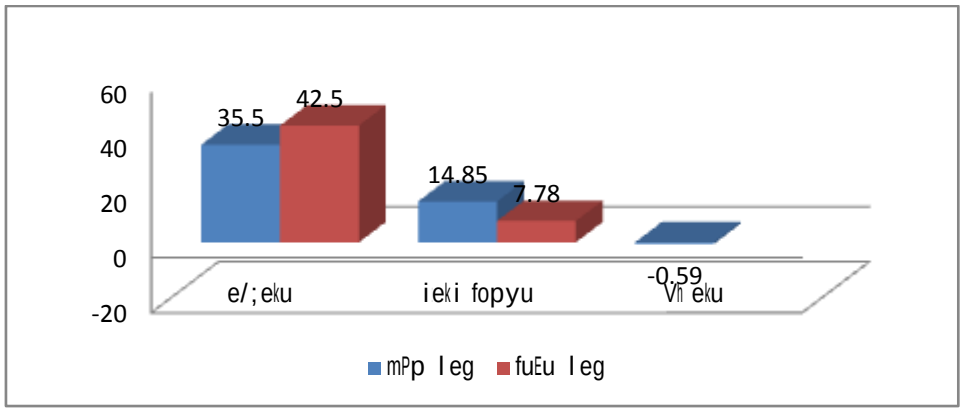

xkeh.k mPp ek/;fed fo|ky;k d पुरूश प्रधानाचार्यों की नेतृत्व शैली की प्रभाव गिलता dk fo|ky; d fodkl ij lkFkd iHkko ugh iMrk gA

rkfydk l[;k 4

नेतृत्व भौली की iHkkoशीyrk	l[;k N	e/;eku Mean	ieki fopyu S. D.	t values	lkFkdrk dk Lrj 0-05	0-01
mPp leg	9	43.50	4.95	0.91	lkFkd vUrj ugh gA	lkFkd vUrj ugh gA
fuEu leg	5	39.00	6.08			

Df=N1+N2-2=(9+5-2)=12

वि लेशण :– उपर्युक्त तालिका संख्या 6 में xkeh.k mPp ek/;fed fo|ky;k **के पुरूश प्रधानाचार्यों की नेतृत्व भौली की प्रभावगिलता** e vkSlr leg l Åij jgu oky i/kkukpk;k ¼mPp leg½ ,o vkSlr leg l uhp jgu oky i/kkukpk; ¼fuEu leg½ d fo|ky;k d fodkl d e/;ekuk ,o ieki fopyuk d vUrjk dh lkFkdrk dh ryuk dh xbZ gA mPp ,o fuEu leg d i/kkukpk;k d ikIrkdk dk x.kuk }kjk प्राप्त मध्यमान क्रम ाः 43-50 ,o 39-00 द र्शाये गये तथा प्रमाप–विचलन क्रम ाः 4-95 ,o 6-08 द र्शाये गये है। इनके आधार पर गणना द्वारा टी मान (t) 0.91 ikIr gvk gA स्वतंत्रता के अं ा 12 (df) ij 0-05 ,o 0-01 सार्थकता स्तर का तालिका मान क्रम ाः 3-18 ,o 5-84 सारणी में द र्शाया गया है। गणना द्वारा प्राप्त टी मान (t) lkj.kh e fn;

गये दोनों सार्थकता स्तर के मान से निम्न है। अतः यहां पर निर्धारित भून्य परिकल्पना Lohdr dh tkrh gA rkfydk e fn, x, nkuk legk d e/;ekuk dk voykdu dju से स्पश्ट होता है कि ग्रामीण उच्च माध्यमिक विद्यालयों के पुरूश प्रधानाचार्यों में उच्च नेतृत्व भौली की प्रभाव ीलता वाले पुरूश प्रधानाचार्यो के विद्यालयों के विकास का मध्यमान, निम्न नेतृत्व भौली की प्रभाव ीलता वाले पुरूश प्रधानाचार्यो के विद्यालयों के fodkl d e/;eku l vf/kd है। अतः निश्कर्शतः कहा जा सकता है कि ग्रामीण उच्च माध्यमिक विद्यालयों के पुरूश प्रधानाचार्यों में उच्च नेतृत्व भौली की प्रभाव ीलता वाले पुरूश प्रधानाचार्यो के विद्यालयों का विकास निम्न नेतृत्व भौली की प्रभाव ीलता वाले पुरूश प्रधानाचार्यो के विद्यालयों के विकास dh rqyuk e vPNk gA

vkjs[k l[;k & 04

ग्रामीण उच्च माध्यमिक विद्यालयों के पुरूश प्रधानाचार्यो की नेतृत्व भौली की प्रभाव ीलता dk fo|ky; d fodkl ij iHkko d e/;ekuk] ekud fopyuk] Vh- eku (t-value) dk दण्डारेख प्रद नि

lUnHkZ xzUFk lwph

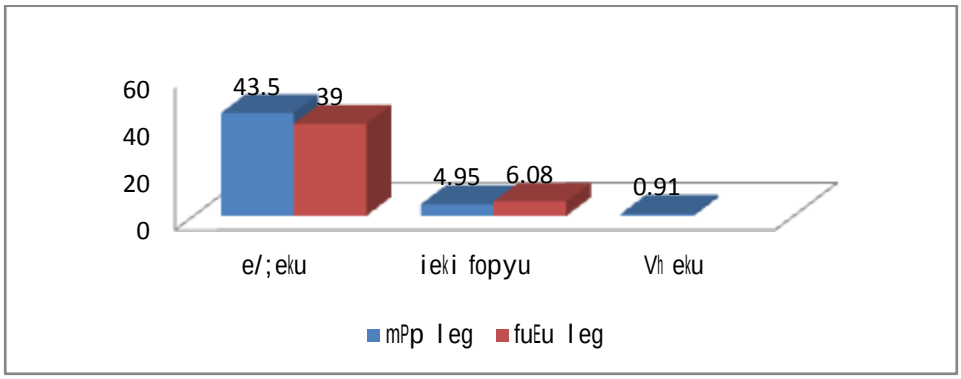

fgUnh fdrkcsa

vLFkkuk] fofiu ,o vLFkkuk 'ork ¼2005½- मनोविज्ञान और िक्षा में मापन एव मूल्यांकन, विनाद iLrd efUnj] vkxjkA

vkLFkkuk Mk- fofiu ,o vkLFkkuk 'ork ¼2005½eukfoKku vkj f'k{kkd ekiu ,o eY;kdu] foukn iLrd efnj] vkxjk i"B & 390 l 391

*,- , l- pkgku "M",Mokl , td'kuy lkbDykth** fodkl ifCyf'kx gkml] ub fnYyh] 2006*

vkM] ,y- d- " ौक्षिक प्र ाासन", राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, प्लॉट नं 1, झालना संस्थानिक {k=] t;ij (2007)

dfiy] ,p- d-, "सांख्यिकी के मूल तत्व", अग्रवाल पब्लिके ान, आगरा। ¼2010½

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

कटारिया डॉ सुरेन्द्र ''प्र ाासनिक सिद्धान्त एवं प्रबन्ध'' ने ालन पब्लि िंग हाउस मेरठ, (2005) i- l- 66

oek] ik- t- ih- 2011, '' ौक्षिक प्रबन्धन'' राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, पृ सं- 283

flg] v:.k dekj ¼2010½] eukfoKku] lekt 'kkL= rFkk f'k{kk e 'kks/k fof/k;k] ekrhyky cukjlh nkl] fnYyhA

flg] Mh- ih-, वाजपेयी, प्रभा, भार्मा, एन- vkj-] flg t- Mh- ''विद्यालय प्रबन्ध एवं f क्षा की समस्याऐं'', रिसर्च पब्लिके ान, जयपुर, नयी दिल्ली (2012)

English Books

Ahuja, R. (2011). Research methods. New Delhi, Rawat Publications, pp.120-121.

National Curriculum Framework for teacher education (NCFTE): Towards Preparing Professional and Humane Teacher. (2010). National Council for Teacher education. New Delhi.

NCERT, Resource Book on Teacher Education NCERT , Publication, NCERT, Sri Aurobindo Marg New Delhi (1999)

PERIODICALS AND JOURNALS

Abdul. (1986). A study of organizational climate of government high schools of Chandigarh and its effect on job satisfaction. In Buch, M. B. (ed.) Fourth Survey of Research in Education. New Delhi: NCERT

Abdul Latif, Pratyanan Thiangchanya and Tasanee Nasae (2010). Relationship between Organizational Climate and Nurses' Job Satisfaction in Bangladesh, The 2nd International Conference on Humanities and Social Sciences, Prince of Songkla University.

Abedi Jafari, H., & Moradi, M. (2005). Studying the relationship between emotional intelligence and transformational leadership. Journal of Management Science, 70, 25-35.

Bhayana, S. (2012). A study of occupational self efficacy, job satisfaction and attitude towards teaching profession among teachers working in teacher training institutions (Doctoral Thesis). M.D. University, Rohtak.

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies